DOI: https://doi.org/10.46632/cllrm/4/3/2

Contemporaneity of Language and Literature in the Robotized Millennium
Vol: 4(2), 2022
REST Publisher; ISBN: 978-81-936097-3-6
Website: http://restpublisher.com/book-series/cllrm/

डिजिटल युग में हिंदी भाषा एवं साहित्य

राहुल.के.एस.

कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,केरल, भारत

संबंधित लेखक ईमेल: rahulks024@gmail.com

मानव ने विकास को अपनाकर आज डिजिटल युग में पहुँच गये हैं । डिजिटल युग से मतलब है इंटर्नेट के माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करके उन सारी सूचनाओं को अपनाना , जिसमें विश्व के किसी भी कोने की सूचना मौजूद हो जाते है । डिजिटल युग ने विश्व को एक छोटे कमरे में समाहित किया है । एक प्रकार से देखे तो मानव की इस सृष्टि ने उनको कहीं भी , कभी भी किसी भी सूचना या घटना को सरल रूप से अपनाने में मदद करते हैं ।

डिजिटल युग की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें मानव जीवन से संबंधित सारी चीज़ों का समावेश हो जाते हैं । भाषा एवं साहित्य भी इससे दूर होकर नहीं रह सकते है । डिजिटल होने से हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार में भी बढाव आए है । पहले तो सिर्फ़ मौखिक रूप का इस्तेमाल करके हिन्दी एवं साहित्य का शिक्षण होते थे । परंतु कोविड ने इन सारे गतिविधियों को रोककर सबको तबाह कर दिया । यह कहना ठीक नहीं कि कोविड के पहले हिन्दी भाषा को ओनलाइन रूप से नहीं अपना सकता था , परंतु इतना तीव्र रूप से उस समय इंटर्नेट में हिन्दी भाषा को अपनाना मुश्किल था । आज ऐसे कई ऑनलाइन प्लैटफॉर्म का उदय हुआ है , जिनके माध्यम से हिंदी भाषा एवं साहित्य का शिक्षण सफल रूप से चालू है । हिन्दी साहित्य के संदर्भ में कहे तो साहित्य जगत में प्रकाशित होनेवाले पुस्तकों को ऑनलाइन में भी मिलना , एक प्रकार से डिजिटल होने का लाभ ही है । किसी पुस्तक का न मिलने या उनका प्रकाशन बंद हो जाने पर भी उस पुस्तक का डिजिटल रूप पाठक को सहायता देते है ।

डिजिटल युग में हिन्दी भाषा को सर्वमान्य रूप प्राप्त हुआ हैं । हिन्दी भाषा को पठने केलिए लोग चार दीवारों के सीमित दायरे से निकलकर इंटरनेट की माध्यम से किसी भी समय भाषा को अपनाने में सफल हुआ हैं । डिजिटल क्रान्ति का एक महत्वपूर्ण देन है कि हिन्दी तकनीकी की भाषा भी बन चुकी है, जिसके फलस्वरूप बहुत सारी ई-कॉमर्स कम्पनियां ने हिन्दी भाषा को भी अपने व्यापार में शामिल किया है । एक प्रकार देखे तो गूगिल एवं गूगिल प्लेस्टोर में उपलब्ध लगभग सभी एप्लीकेशन के भाषओं में आज हिन्दी भी मौजूद है । इसके अलावा एमजोन द्वारा विकसित 'किनडील' नामक एक इलक्ट्रोनिक उपकरण है , जिसमें ई-पुस्तकें उपलब्द हो जाते है । इस किन्डिल में भी हिन्दी भाषा एवं साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें मौजूद है । इस

Copyright@ 2022 REST Publisher

प्रकार हिन्दी भाषा को सिर्फ भारत में ही नहीं , वैश्विक तौर पर भी लोकप्रियता मिली है । अंतर्राष्ट्रीय तौर पर हिन्दी भाषा एवं भारतीय संस्कृति से जुड़े रहने केलिए अधिक से अधिक लोग आ रहे है । डेनमार्क के एक विश्वविद्यालय में हिन्दी की प्राध्यापिका रजनी बहल विदेशी बच्चों के द्वारा बड़ी संख्या में हिन्दी सीखने के पीछे के तात्पर्य को स्पष्ट करती हुई बताती है " पहले सीटें भरनी बहुत मुश्किल होती थी , लोग सिर्फ चाइनीज़ व जापानीज़ सीखने आते थे । मगर अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार बढ़ जाने से लोग हिन्दी सीखने लगे है । "[1] बहल बताती है की उनके पास तीन तरह के विद्यार्थी हिन्दी सीखने आते है –एक जो इंडियन कम्पनियों के साथ मिलकर व्यापार कर रहे है । दूसरे , जो इंडियन कुकिंग सीख रहे है और इस सिलसिले में उनका भारत जाना भी होता है । इन दो श्रेणी के लोगों को बस बोलचाल केलिए हिन्दी जानने में रुची है । तीसरे, युवा समुदाय जिसे भारतीय संस्कृति व दर्शन में जिज्ञासा है वह ढंग से हिन्दी पढ़ना - लिखना चाहता है ।

हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार के सम्बन्ध में नई शिक्षा नीति 2020 में भी प्रावधान दिए गए है । भारतीय भाषाओं, प्रमुखतः हिन्दी भाषा शिक्षण को डिजिटल माध्यमों के ज़रिए जनता तक पहुँचाने में वे सफल भी हुए है । वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा को प्रमुखता देने में गूगिल जैसे कंपनियों मौजूद है । इनका मकसद भले ही उपभोक्तावादी हो ,पर उससे कहीं न कहीं हिन्दी एक वैश्विक ताकत के तौर पर मज़बूत पा रही है । यहीं नहीं 2016 में हुए अमरीकी राष्ट्रपति चुनाव में मतदान पर्ची पर पहली बार हिन्दी में मतदाताओं को धन्यवाद का उल्लेख किया गया था । अमरीका की चुनाव के इतिहास में पहली बार अन्य भाषाओं के साथ हिन्दी ने अपनी जगह बनाई । यह एक भाषा के बढ़ते दायरे का प्रतीक है , साथ ही साथ वैश्विक स्तर पर हिन्दी की स्वीकार्यता का भी प्रमाण है ।

आगे हम डिजिटल युग में हिन्दी साहित्य की ओर देखेंगे तो मालूम होगा कि साहित्य भी विस्तार एवं प्रगति की रास्ते में है । एक ओर हिन्दी साहित्य में रचनाएँ डिजिटलीकृत रूप में निकल रहे है , तो दूसरी ओर उनके सम्बन्ध में चर्चा-परिचर्चा , ब्लॉग आदि भी डिजिटल माध्यम द्वारा प्रस्तुत हो रहा है । डिजिटल साहित्य को हम परिभाषित करना चाहते हो तो वह ऐसा होगा – जिस साहित्य ने तकनीकी से जुड़कर अपना निर्माण किया , उसे ऑनलाइन या डिजिटल साहित्य के नाम से अभिहित किया जाता है । इसकेलिए कई अन्य नाम भी प्रचलित है, जैसे – इलक्ट्रोनिक साहित्य या ई-साहित्य , डिजिटल साहित्य, साइबर साहित्य , हाइपर टेक्स्ट साहित्य , न्यू मीडिया राइटिंग आदि । वास्तव में इन्टरनेट पर उपलब्ध साहित्य को ही डिजिटल साहित्य का नाम दे सकते है । इस डिजिटल साहित्य का प्रयोग दो रूपों में किया जा सकता है , ऑनलाइन और ऑफलाइन । ऑनलाइन में हम सीधे इन्टरनेट का इस्तेमाल करके किसी साहित्यिक रचना को अपना सकते है , तो ऑफलाइन रूप में हम पहले ऑनलाइन से डाऊनलोड किये हुए फ़ाइल को अपना सकते है , जिसमें डाऊनलोड करने के बाद इन्टरनेट की आवश्यकता नहीं होते है । ऑनलाइन साहित्य का स्वरूप अत्यंत

[1] https://hindi.news18.com/amp/blogs/prakash-upreti/hindi-diwas-raising-question-apart-from-feeling proud- is-necessary-in-digital-era-3237270.html

विस्तृत है ; क्योंकि इसमें तकनीकी की सहायता से रूप , रंग ,साज-सजावट , शैली आदि पर बदलाव आ जाते है । इन्टरनेट में तो वेबसाईट , ब्लॉग, ई-पत्रिकाएँ , विभिन्न सोशल नेट्वर्किंग साइट आदि की माध्यम से डिजिटल साहित्य उपलब्ध होते हैं ।

डिजिटल साहित्य के अंतर्गत इंटरनेटपर उपलब्ध साहित्य को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है:-

- मुद्रित साहित्य का डिजिटलीकृत रूप ।
- व्यक्तिगत ब्लॉग , ई- पत्रिकाएँ , सोशल नेटवर्किंग साईट , वेबसाईट आदि पर उपलब्ध मौलिक साहित्य ।

प्रथम श्रेणी में उन तमाम पुस्तकों का डिजिटलीकृत रूप आ जाते हैं , जो पहले मुद्रित होकर प्रकाशित हो गए है , और बाद में तकनीक के सहायता से डिजिटल बना दिया है । इस डिजिटल रूप को पी.डी.एफ या ऑनलाइन रूप से अपना सकता है । महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय विश्विद्यालय , वर्धा के 'हिन्दी समय.कॉम' , कविता कोष , भारत कोश, गद्यकोश आदि वेबसाईट के माध्यम से भी हिन्दी साहित्य जनता तक पहुँच रहे हैं , जिसके फलस्वरूप देश – विदेश के पाठक अपने पसंदीदा साहित्यिक रचना को कहीं भी कभी भी पढ़ सकते है । दूसरे श्रेणी में आनेवाले साहित्य ऑनलाइन साहित्य के विशेषताओं से युक्त होता है । डिजिटल वातावरण में लिखे जाने के कारण उसमें शब्द, दृश्य , एनिमेशन , वीडियो , ऑडियो आदि तकनीक का होना स्वाभाविक है । इसका एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है की सामान्य रीति से भिन्न होने के कारण पाठकों को भी ज़्यादा आकर्षित करते हैं ।

इन्टरनेट में साहित्य के चर्चा करनेवाले वेबसाईटो में साहित्यिक गतिविधियां भी होते रहते है । इसके सन्दर्भ में सुनीलकुमार लवटे ने लिखा है " हिन्दी साहित्य से संबंधित वेबसाइटें के रूप की दृष्टि से अनेक प्रकार हैं । कुछ पर हर दिन नया साहित्य प्रकाशित होता है । कुछ व्यक्तिगत साइटें भी है जिन पर लोग अपना लिखा हुआ साहित्य प्रकाशित करते हैं । " [2] अर्थात् सुनीलजी ने यहाँ दो प्रकार के साइटों से हमें परिचित कराते है , जिसमें साहित्य से सम्बन्धित साइटों के साथ - साथ ब्लॉग के बारें में भी सूचना मिलता है । डिजिटल युग में ब्लॉग का योगदान महत्वपूर्ण है । ब्लॉग एक प्रकार का वेबसाईट है जिसमें व्यक्ति अपने बातें , विचार , चिंतन आदि को खुले रूप से लिखते है । इन ब्लौगों में विभिन्न प्रकार के चर्चाएँ भी प्रस्तुत होते है , जैसे राजनीतिक , सामाजिक, आर्थिक आदि । यह एक ऐसा मंच है जो लोगों को स्वतन्त्र रूप से अपने मन में उत्पन्न विचारों के आदान – प्रदान के साथ – साथ चर्चा भी प्रस्तुत कर सकते हैं । ब्लॉग के बाद सोशल नेट्वर्किंग साइटों आ जाते है जो प्रत्येक व्यक्ति की विचारों को प्रस्तुत करने का एक अन्य महत्वपूर्ण माध्यम है । सोशल नेट्वर्किंग साइटों से मतलब एक

[2] हिन्दी वेब साहित्य ; डा.सुनीलकुमार लवटे ; पृ.सं.42

ऐसी जगह से है , जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने संक्षिप्त परिचय के जरिए दूसरों के साथ ऑनलाइन में सम्बन्ध स्थापित कर सकता है । अमांडा लेंहर्ट तथा मेरी मेडेन ने एक लेख में लिखा है " A social networking site is an online place where a user can create a profile and build a personal network that connects him or her to other users."[3] इंटरनेट की दुनिया में फेसबुक , ट्विटर , व्हाट्सएप्प आदि अनेक सोशल नेटवर्किंग साईट और एप्लिकेशन उपलब्ध है , जिनके माध्यम से सामाजिक , राजनीतिक, साहित्यिक , शैक्षणिक आदि विभिन्न पहलुओं से संबंधित सूचनाएं प्रस्तुत हो जाते है । इन साइटों में ऐसे अनेक ग्रुप भी होते है , जिसमें प्रत्येक विषय संबंधी चर्चा-परिचर्चा , तर्क आदि संपन्न होते है । अर्थात् यह एक माध्यम है जो लोगों को अपने मत को प्रस्तुत करने में जो कुछ भी सीमाएँ है , उनका दूर करते है ।

आगे हम हिन्दी साहित्य सफल रूप से उपलब्ध इन्टरनेट वेबसाईटों का नाम ले तो पहले ई – पुस्तकालय और कविताकोश का महत्वपूर्ण स्थान देखने को मिलते है । कविताकोश में हजारों कविताएँ , हज़ारों कवियों का पेज, देश – विदेशी अनूदित कविताओं को एक ही जगह में पठने की सुविधा मिलाती है । ई-पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण वेबसाईट है , जिसमें मुफ्त रूप में हम पुस्तकों को पढ़ भी सकते है , डाऊनलोड भी कर सकते है और चाहिए तो उनका प्रिंट भी ले सकते है । किसी पुस्तक मिलने में कोई दिक्कत है तो इस साईट से उस समस्या का समाधान हो जाते है । हिन्दी भाषा के अलावा मराठी, बंगाली और संस्कृत भाषा के पुस्तक भी इस साईट में उपलब्ध है । इसके अलावा साहित्य चिंतन , ज़िन्दगी गुलज़ार.कॉम , 44बुक्स.कॉम , हिन्दी प्रतिलिपि ऐसे अनेक वेबसाईट भी मौजूग है जहाँ हिन्दी भाषा एवं साहित्य संबंधित अनेक पुस्तक औंलाइन रूप में उपलब्ध है । इसमें हिन्दी प्रतिलिपि एक मशहूर साईट है , जो सिर्फ प्रकाशित पुस्तकों को ही नहीं , बल्कि नये लेखकों से भी रचनाएँ आमंत्रित करते हैं । अर्थात् जिन लोगों को लिखने की रूचि है , उसको बढ़ाने में इस वेबसाईट सहायता देते है ।

कुल मिलाकर कहे तो डिजिटल युग में हिन्दी भाषा एवं साहित्य की लोकप्रियता एवं प्रचार – प्रसार में बढाव आई है । तकनीक के विकास के कारण साहित्य का डिजिटलीकृत रूप युवा जनता को अधिक से अधिक लाभ पहुँचा है । इसी डिजिटल माध्यम से हिन्दी वैश्विक तौर पर भी महत्वपूर्ण स्थान रखते है । मुद्रित एवं मौखिक माध्यम के द्वारा हिन्दी भाषा एवं साहित्य में जो सीमाएँ उपलाब्ध थे , डिजिटल रूप ने इस सभी सीमाओं को तोड़ डाला है । अतः कहा जा सकता है कि डिजिटल युग को हिन्दी भाषा एवं साहित्य ने पूर्ण रूप में अपना लिया है और इसमें प्रगति भी दिन ब दिन आ रहे है ।

[3] Amanda Lenhart and Mary Madden; Social networking websites and teens – An overview